निर्मल वर्मा की कहानियों में विदेशी परिवेश एक मूल्यांकन

डॉ. पूनम कुमारी
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

इस संसार में अन्य सभी प्राणियों के बीच मानव भी एक ऐसा प्राणी है जिस पर प्रकृति के सभी घटकों ताप, वर्षा, गर्मी, सर्दी, जल, वायु का प्रभाव तो पड़ता ही है साथ ही सम्पर्क में आए हुए व्यक्तियों, उनकी आदतों, व्यवहारों, का भी प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति पर जिस समाज में वह रहता है उसके रीति–रिवाजों परम्पराओं एवं मान्यताओं का भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

निर्मल वर्मा लगभग 14 वर्षों तक यूरोप में रहे। उन्होंने यूरोप के बहुत से दे"ाों की यात्रा की तथा वहां की संस्कृति, सभ्यता और समाज में घटित होने वाली घटनाओं को बहुत नजदीक से देखा है। वैसे भी यह मानव की प्रकृति रही है कि जहां भी वह रहता है उस धरती से उसे प्यार हो जाता है उस माटी की सुगन्ध वह कभी नहीं भूल सकता और यह माटी की सुगन्ध उसे बार–बार अपनी याद दिलाती रहती है। निर्मल वर्मा ने अपने जीवन का सुनहरी समय प्राग में व्यतीत किया है इसलिए निर्मल वर्मा उसे कभी नहीं भूल सकते। प्राग की भूमि पर गुजारे दिनों की मधुर स्मृतियां उनके दिल पर स्थाई प्रभाव डाल देती हैं जिस कारण वह अपनी कहानियों को भी उन मधुर स्मृतियों से दूर नहीं रख सकते।

उन्होंने यूरोप के समाज में मानवीय सम्बन्धों के बनते बिगड़ते खेल, वासना को सड़कों पर दौड़ते, यौन चेतना को संस्कारों की पर हावी होते, स्वार्थी एवं कौतुहल से भरपूर दाम्पत्य जीवन, अकेलेपन की पीड़ा, नारी शोषण, तलाक, सत्रांस, भय एवं दिखावटी तथा क्षणिक प्रेम को देखा जिसके प्रत्यक्ष द"ान उनकी कहानियों में किए जा सकते हैं। परिवे"ा चाहे दे"ाी हो

या विदे"ाी परन्तु मानव मन हर जगह एक है, हर जगह मानव मन की चिंन्तन शक्ति एक होती है। निर्मल वर्मा की कहानियां वास्तव में विदे"ा की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर वहां के समाज और मानव की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती है। निर्मल वर्मा का कहना है कि "मानव सदा एक सा है। उसही गहन समस्याएं और मानसिकता दे"ा विदे"ा में कहीं नहीं बदलती। व्यक्ति का अकेलापन सब जगह है और वह समाज में अपना अधिकार यहां वहां सब जगह पाना चाहता है।"

निर्मल वर्मा विदे"ाी परिवे"ा (वि"ोषतः प्राग) से अधिक प्रभावित है। इसी कारण इनकी लगभग सभी साहित्य विधाओं में विदे"ाी परिवे"ा (पि"चमी परिवे"ा) का प्रभाव देखने को मिलता है। निर्मल वर्मा भले ही हिन्दुस्तान के दिल्ली या शि"ामला में

रचना कर रहे हो परन्तु अधिकतर वर्णन प्राग का किया करते हैं क्योंकि वे अधिकतर प्राग के परिवे"ा से एक भेंटकर्ता ने उनसे पूछा कि आपकी कहानियां और उपन्यास विदे"ाी रंग लिए है इसका कारण आपका व्यापक विदे"ा भ्रमण है या कुछ और है तो निर्मल वर्मा उत्तर देते हैं कि – "मुझे विदे"ाी रंग का शब्द कुछ ऐसा ही अजीव जान पड़ता है जैसे आंचलिक कहानियों का 'लोकल कलर'। मैंने अपने जीवन के बहुत से वर्ष यूरोप में बिताएं हैं, उसका असर मेरी कहानियों पर पड़ा है, लेकिन यदि मैं विदे"ा न भी जाता तो भी मेरी कहानियों में शायद कुछ ऐसा ही रहता, जिसे हिन्दी आलोचक विदे"ाी मानते हैं। मेरे विचार में एक औपनिवे"ाक दे"ा का लेखक स्वयं को इस प्रभाव से मुक्त नहीं रख सकता, चाहे वह सारी जिन्दगी अपने ही दे"ा में क्यों न बिताएं।"[1]

निर्मल वर्मा की कहानियों में विदे"ाी परिवे"ा से अभिप्रायः चेकोस्लोवाकिया, प्राग, लंदन आदि विदे"ा के दे"ाों की सभ्यता एवं संस्कृति आदि से है जहां का जीवन शराब, वीयर, वाईन आदि पीकर क्लबों, होटलों और रेस्तरां में सुन्दर लड़कियों के साथ ऐ"ा आराम तथा नाचते गाते गुजर जाता है। उनकी कहानियों में पब, बीयर, शराब, म्युजिक सैक्स आदि का अधिक प्रयोग हुआ है। "निर्मल का समस्त लेखन एक ही रचना है – एक ही रागिनी – किन्तु केवल रागिनी वह इसलिए नहीं है कि न तो वह साधना किसी शास्त्रीय संगीतज्ञ की है। एकान्त तपोसाधना और न वह अकृत्रिम और पो"ा है तो नाच के जोड़ों के लिए अ"ोक और ताज से छोटी श्रेणी के शराब घरों में बजती है, थोड़ी अभिजात है – किन्तु अज्ञेय के गद्य के भीतर जो एक अभोगा सा अभिजात्य है – नारी देह को लेकर जो कल्पित सा सुख है – वह भी नहीं। यदि है तो बीयर का हल्का और गहरा सुख में इसे न"ाा भी कहेगा।"[2]

निर्मल वर्मा की कहानियों में हर घटना में कहीं न कहीं विदे"ाी परिवे"ा नजर आता है। घटना चाहे दिल्ली की हो, चोकोस्लोवाकिया की हो, ि"ामला, इग्लैंड, लंदन या फिर प्राग की क्यों न हो, सभी में एक जैसा परिवे"ा लगता है। विदे"ाी परिवे"ा में रंगी हुई इन कहानियों में अन्तर करना पाठकों के लिए कठिन हो जाता है। अपनी कहानियों में विदे"ाी परिवे"ा के बारे में स्वयं निर्मल वर्मा कहते हैं कि – "वर्षों विदे"ा में रहने के कारण मेरी कुछ कहानियों में शायद एक वीराने किस्म का प्रवासीपन चला आया है, मुझे नहीं मालूम यह इन कहानियों को अच्छा बताता है या बुरा।"[3]

निर्मल वर्मा अपनी कहानियों को विदे"ाी कहन से इन्कार करते हैं और कहते हैं कि – "कुछ भी हो उन्हें विदे"ाी कहानियां कहना शायद ठीक न होगा। यों भी मुझे कहानियों, कविताओं को भौगोलिक खण्डों में विभाजित करना अरुचिकर और बहुत हद तक अर्थहीन लगता रहा है।"[4]

निर्मल वर्मा विदे"ाी में व्यतीत किए हुए दिनों के बारे में कहते हैं – "विदे"ा में गुजारे दिन जैसे प्लेट फार्म पर गुजारी रात हो।"[5]

बहुत से आलोचकों ने निर्मल वर्मा की कहानियों को विदे"ाी परिवे"ा की पृष्ठभूमि पर लिखी कहानियां कहा है। इनकी कहानियों में विदे"ाी सभ्यता तथा संस्कृति के द"र्ान हैं, इसी बात का खण्डन करते हुए निर्मल वर्मा कहते हैं कि "जिन्दगी भर इंग्लैंड के बाहर अपने उपन्यासों के कथानक ढूंढते रहे – लेकिन रहे शुरू से आखिर तक ठेठ अंग्रेजी लेखक। क्या लारेन्स की कहानियों उपन्यासों को विदे"ाी कटघरों में बांधना हास्यस्पद नहीं होगा ? मैं यह चीज यहां अपनी कहानियों को बचाने में नहीं ताकि हम निरर्थक बहसों से छुटकारा पा सकें। दरअसल किसी लेखक की पृष्ठभूमि विदे"ाी है या दे"ाी–यह चीज बहुत ही गौण है – उसका महत्त्व तो सिर्फ उसमें है कि किस सीमा तक और कितनी गहराई से वह किसी खास स्थिति या नियति को खोल पाती है – बल्कि महत्त्व की कोई चीज है तो सिर्फ यही है – बाकी सब राख है।"[6]

निर्मल वर्मा अपने कहानीकार बनने का तथा कहानी की प्रेरणा पाने का सारा श्रेय प"िचम के लोगों को देते हैं वे कहते हैं – "मुझ में चाहे कोई आकर्षण न हो लेकिन लुटी– पिटी 'बार' या पब में बहुत पियक्कड़ों की– या ऐसे तलछटी प्राणियों को, जो बहुत गहरे में जा चुके हैं, अपनी तरफ खींचने की अद्‌भुत क्षमता रही है। मुझे देखते ही वे मेरी मेज के इर्द–गिर्द बैठ जाते थे – यू आर ए क्वायट इण्डियन – आरन्ट यू ? उनकी ऊपर से अनर्गल सी दीखने वाली आत्मकथाओं में मुझे पहली बार उन अन्धेरे कोनों से साक्षात्कार हुआ, जिन्हें में छिपाकर रखता आया था। आज में जो कुछ हूँ उसका एक हिस्सा उन अज्ञात लोगों की देन है – जो अब हमे"ाा के लिए दुनिया के अलग–अलग कोनों में खो गए हैं।"[7]

निर्मल वर्मा अपनी कहानियों में विदे"ाी परिवे"ा की तरफ झुकाव का कारण भारतीयों का हीन भावना से ग्रस्त होना भी मानते है। विदे"ा को स्वदे"ा के मुकाबले हीन समझना इसका कारण है। प"िचमी सभ्यता का अन्धानुकरण करके खुद को उतम कोटि का बनने की मृग तृष्णा, निर्मल वर्मा भारतीयों का हीन भावना से ग्रसित होना मानते है। जब निर्मल वर्मा स्वदे"ा वापस आकर कुछ लोगों से भेंट करते हैं तो उनका हृदय दुःख से भर जाता है एक साधु उनसे कहता है, "बाबू देखते क्या हो ? साक्षात ि"ाव के अवतार हैं, अवतार हैं, रात भर नहीं सोते।" जब मैं मुंह फेरकर जाने लगा तो ि"ाव जी के चेले ने ि"ाकायत भरी नजरों से मेरी तरफ देखा। चुनौती सी देते हुए बोला, आप नहीं समझेंगे। बाबू विलायत के लोग इनकी महिमा गाते हैं।"[8]

"विलायत का नाम सुनकर सहसा मेरे पांव ठिठक गए। मुझे लगा शायद वह मुझे कोई सर्टिफिकेट दिखायेगा। आ"चर्य की बात न होती जब हमारे साहित्यकार अमरीकी वि"व विद्यालयों में गांधी जी की महिमा गाते नहीं थकते, तो कोई साधु अपनी महिमा के सवृत में विदे"ाी प्र"ास्ति पत्र दिखाए तो स्वाभाविक ही होगा। मैंने एक बार उस ठूंठ को देखा जो ि"ाव के अवतार थे। एक बार इच्छा हुई कि मैं उन्हीं के पास बैठ जाऊं। धीरे से कहूं कि जैसे वह है –धूल में सने हुए गंगा के किनारे आंखें मूंदे हुए उसी में उनका गौरव है – प्र"ास्तियों की उन्हें कोई जरूरत नहीं, चाहे वह भारतीय साधुओं की हो या भारत भक्त अमरीकी महिलाओं की।"[9]

निर्मल वर्मा का कहना है कि ""ायद ही किसी दे"ा का कोई वर्ग अपनी समृद्धि में इतना ओछा हो जितना भारत का उच्च वर्ग। उन्होंने पि"चमी की देखा–देखी समृद्धि के सब साधन जरूर जोड़ लिए हैं किन्तु भीतर की दरिद्रता रह रह कर ऊपरी लीपा पोती के बाहर वह जाती है।"[10]

निर्मल वर्मा की दृष्टि में सब कुछ महत्त्व रखता है परन्तु गौरव–गरिमा जैसा अहंकार कोई महत्त्व नहीं रखता है। वे समझते हैं कि 'ला कार्बूजिए' को बुलाकर चण्डीगढ़ बनाया जा सकता है, विदे"ाी टेप–रिकार्डर और फ्रिज में आत्मा को सुना जा सकता है, ठंडा किया जा सकता है किन्तु उस गरिमा और गौरव को इम्पार्ट नहीं किया जा सकता जिससे मकान घर बनते हैं। घरों के सम्मिलित संस्कार नगर, जिसके आस पास स्मृतियां जुड़ती हैं, अतीत से जुड़ी होने के बावजूद वर्तमान धमनियों में स्पन्दित होती हुई – जिसके अभाव में हर चण्डीगढ़ आधुनिक खण्डहर है, हर खण्डहर मिट्टी का महिमाहोन ढूह।"[11]

निर्मल वर्मा सोचते हैं कि "यह एक कारण है कि भारतीय सिनेमा घरों में फिल्म शुरू होने से पहले विज्ञापनों की जो कमि"र्यल फिल्में दिखाई जाती हैं, उन्हें देखकर अन्धेरे हाल में शर्म से हाल में शर्म से मुंह लाल हो जाता है, स्वस्थ, चिकने चुपड़े बच्चो को मुस्कराती हुई मां से जिस अदा से 'कार्नफ्लैक्स' देती है वह न जाने क्यों मुझे असह्य जान पड़ता है। मुझे ये तीन ही चीजें जान पड़ती हैं – बच्चे, मांए, कार्नफ्लैक्स। यूरोप में मुझे अनेक 'फिल्में' देखने का मौका मिला है किन्तु शायद ही अ"लीलता का इतना नंगा बोध पहले कभी हो। कोई चीज अपने में अ"लील नहीं होती। एक खास परिवे"ा में अव"य ही अ"लील हो जाती है।"[12]

जलती झाड़ी में नायक कहता है कि – "यह एक टापू था, शहर के छोर पर, जहां पहाड़ी शुरू होती है। नदी को दो धाराएं कैंची की तरह उसे बीच से काट गई थी। पुल के नीचे लम्बी घास भीगती रहती थी। किनारे पर दूर–दूर लाल तख्तों की बैंचे पड़ी थी। .....सांय की मद्धिम धूप में धुएं के दायरे फैल जाते थे। एक सोंधी सी गंध टापू के इर्द–गिर्द हवा में तिर जाती थी।"[13]

टापू के इस खूबसूरत दृष्य से पाठक का मन स्वयं भी हिलौरे खाने लगता है तथा टापू की सुगन्ध से विदे"ा की धरती के द"ान कहानियों में ही कर लेता है इसके प"चात पुनः इसी कहानी में टापू का सौन्दर्य नायक के मन को मोह लेता है जब वह "अपने पास बैठी लड़की से उसके मित्र के विषय में पूछते हुए नायक उसे बतलाता है कि वह कहां छुपा है। यह बताने के लिए नायक ज्यों ही पीठ मोड़ता है उसे लड़के के बजाए टापू का सौन्दर्य मोह लेता है। वह कहता है – टापू पर डूबते सूरज की पीली, मैली सी ललहाट फैल गई थी दूर पुल के पास जलते पत्तों के ढेर से अब भी धुंआ उठ रहा था, किन्तु वह कहीं न था। सिर्फ हवा चलने से पत्ते बैंचों पर लुढ़क कर धरती पर लौटने लगते थे।"[14]

जब पतझड़ में पत्ते पीले और आधे सूखे होकर पेड़ों से झड़ कर सड़कों, गलियों, पार्कों तथा बैंचों पर बिखर जाते हैं तो नायक बड़ी उदासी के साथ टकटकी लगाकर उन पत्तों को देखता है। 'जलती झाड़ी' का नायक कहता है – "ऐसा ही पतझड़ का एक दिन था, अब मैं वहां चला आया था। यह एक टापू था – शहर के छोर पर जहां पहाड़ी शुरू होती है। नदी की दो धाराएं कैंची की तरह बीच में से काट गई थी। पुल के नीचे लम्बी घास पानी में भीगती रहती थो। किनारे पर दूर–दूर तक तख्तों की बैंचे पड़ी थी। उन दिनों अक्सर ये बैंचे खाली रहती थी। बिल्कुल खाली थी नहीं .....पत्ते उन पर लगातार झरते रहते। जब कभी कोई हवा का झौका उन्हें उड़ा ले जाता तो वही झौंका वापिस मुड़कर दूसरे पत्तों को उन पर बिखेर देता।"[15]

निर्मल वर्मा की कहानियों में पुरुषों की वे"ाभूषा का कम तथा नारियों की वे"ाभूषा का अधिक वर्णन मिलता है। नारियों का पहनावा पा"चात्य है। इनकी नायिकाएं स्कर्ट तथा स्कार्फ पहनती हैं जिनमें आधी जांघे तथा टांगे दिखाई देती हैं। 'दो घर' के भारतीय नायक ने अपनी अंग्रेज मित्र को "सिर्फ एक बार भीतर घर में साड़ी में देखा था। जब वह स्कर्ट पहने थी ! वालों पर स्कार्फ। उसके छितरे वालों पर कसा भूरे रंग का स्कार्फ, कंधे पर लटकता झोला, घुटनों के नीचे पुराने तर्ज की खिसकती हुई स्कर्ट।"[16] 'लवर्स' की नायिका ने काली शाल ओढ़ रखी है और उसके बाल सूखे हैं उसके होठों पर बहुत हल्की लिपस्टिक है, जैसी वह अक्सर लगाती है।"[17] 'एक शुरूआत' का नायक कहता है – "सर्दियों में यहां की लड़कियां जीन्स पहनती है। स्टीमर खचाखच भरा था, चारों और नीली जीन्स पहने लड़कियां हवा में उड़ते रंग–बिरंगे स्कार्फ और बीयर के गिलास के इर्द–गिर्द बैठे लड़के–लड़कियों के गुच्छे दिखाई दे जाते थे।"[18] 'पराये शहर में' का नायक बताता है कि – "और वह एक विराट स्त्री थी। उसने सस्ती जार्जेट की लम्बी स्कर्ट पहन रखी थी। जुराबें लायलन की थी। लेकिन ऐड़ियों के पास से घिस गई थी।"[19] लड़की की स्कर्ट का अगला हिस्सा शायद झाड़ी में फंस गया था। उसके बाल

खुले हैं, बहुत छोटे हैं। बिल्कुल लड़कों के से काले रंग की बरसाती पहने हैं ! बटन खुले हैं जिसके नीचे स्कर्ट घुटनों तक खिसक आया है।"[20] बिली जॉज के साथ नाच रहो लड़की के पहनावे को बताता है – "जिस लड़की के संग वह नाच रहा था .....उसके नंगे कंधों पर पाउडर के हल्के नि"ाान थे और उसने सस्ती छीट की स्कर्ट पहन रखी थी। होंठो पर पसीने की बूंदे थी जो शायद देर तक नाचने के कारण लिपस्टिक के ऊपर छितरा आई थी।"[21] 'अन्तर' का प्रेमी अपनी प्रेमिका के पहनावे के बारे में बताता है – "उसने हरे रंग की नाईट–शर्ट पहन रखी थी। उस पर काले रंग के फूल थे। .....उसके बाल पहले भी छोटे थे। पिछली गर्मियों में उसने उन्हें काले शेड में रंगा लिया था और अब वे फिर धीरे–धीरे भूरे हो चले थे, हालांकि अब भी कहीं बीच–बीच में काला शेड दिखाई दे जाता था।"[22] 'दहलीज' की रूनी फ्रॉक पहनती है। उसकी गर्दन के नीचे फ्रॉक भीतर से ऊपर उठती हुई कच्ची सी गोलाइयों में मीठी–मीठी सी सुइयां चुभ रही हैं।"[23]

'जलती झाड़ी' का नायक कहता है – "उसे लम्बे ओवर कोट ने अन्धेरे में उसे कुछ इस ढंग से छिपा लिया था गौर से देखे बिना उसके अलग अस्तित्व को पहचानना असंभव था।"[24]

निर्मल वर्मा के पात्र हमे"ाा निरा"ाा के अंधकार में खोए रहते हैं 'लन्दन की एक रात' के पात्र–काम की तला"ा में घूमते रहते हैं। इस कहानी का नायक कहता है – "किन्तु नार्थ एक्टन से जरा आगे चलकर मेरे पांव खुद–बखुद ठिठक गए। सोचा था आज मैं जल्दी आ गया हूँ और गेट पर मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं होगा किन्तु मेरा अनुमान सही न था। वहां पहले से ही बीस पच्चीस बेरोजगार युवकों की भीड़ जमा थी।" "जॉज भी बड़े उदास स्वर में कहता है – "हां लेकिन गर्मियों की छुट्टियों में काम करता हूँ, पहले डांस के लिए आता था –उसका स्वर काफी उदास था।"[25] इधर परिन्दे की लतिका पेर"ाान तो उधर 'लवर्स' का निन्दी प्रेम की मार से निरा"ा है। 'जलती झाड़ी' का वृद्ध प्रतिदिन कोटा लेकर मछली पकड़ने आता है और खाली हाथ लौट जाता है।

कहानियों में कोई पात्र काम न मिलने के कारण पेर"ाान है, कोई प्रेम पाने के लिए, कोई प्रेमिका के साथ अन्य लड़कों के घूमने के कारण, कोई प्रेम में फंस कर निरा"ा है। कुछ पात्रों को विरह की आग में जलना पड़ रहा है तो कुछ को शराब तथा बीयर जला रही है। इस तरह पात्र कुण्ठा और निरा"ाा से घिरे रहते हैं।

निर्मल वर्मा के पात्र हमे"ाा असुरक्षा के बीच जी रहे हैं। वे हर क्षण भयभीत रहते हैं। कुछ पात्र नाजायज प्रेम सम्बन्धों के कारण भय में रहते है तथा कुछ पात्र शराब, बीयर पोकर भय में रहते हैं तो कुछ समय से बीयर या कोई अन्य न"ाा न

मिलने के कारण कांपते दिखाई देते है। पात्र खुद को ऐसे परिवे"ा में पाते हैं जहां चारों तरफ भय और असुरक्षा ही असुरक्षा दिखाई देती है। 'लन्दन की एक रात' का नायक कहता है कि "विली वे नाम सुनते हो डर जाता है। वे एक बहुत ही ठंडा आतंक सांस–सी कुण्डली सा उसकी आखों में बैठ गया था और उसने कहा था – एण्ड फार देट आई हैट हिम, आई हैट हिम लाई हैल।"[26]

'जलती झाड़ी' का नायक आत्मीयता पाने के लिए किस कदर तरसता है उसी की भावना का चित्र – "मुझे अपने भीतर एक अजीव सी बैचेनी महसूस होने लगी। उसे मेरे अस्तित्व का बिल्कुल भी आभास नहीं। हालांकि मैं उसके इतने पास बैठा हूँ – यह मुझे अत्यन्त अस्वाभाविक सा जान पड़ा। अनजाने शहर में कभी–कभी आत्मीयता की भूख कितनी बढ़ जाती है, वह उस क्षण से पहले मैं नहीं जान पाया था।"[27] 'दहलीज' की 'रूनी' शम्मी भाई के सहवास के लिए तड़पती रहती है। उसे उस समय ईर्ष्या भी होती है जब शम्मी भाई 'जैली' के प्यार में डूबे रहते हैं "वह सांसे रोके निस्पन्द आंखों से उस पत्थर को देखती रही थी जिस पर कुछ देर पहले '"ाम्मी भाई' और 'जेली' बैठे थे .....आंसुओं के पीछे से सब कुछ धुंधला–धुंधला सा हो जाता है..... शम्मी भाई का कांपता हाथ, जेली की अधखुली सी आंखें क्या वह उन दोनों की दुनिया में कभी प्रवे"ा नहीं पायेगा ? मेहरूबती बुझा दे ..... उसने संयत निर्विकार स्वर में कहा .....देखती नहीं, मैं मर गई हूँ।"[28] इसी प्रकार 'लवर्स' का 'निन्दी' भी अपनी प्रेमिका का सहवास पाने के लिए तड़फता रहता है।

निर्मल वर्मा के पात्रों में मानवीय सम्बन्धों की आत्मीयता तो है ही नहीं परन्तु उनमें रि"ते की पहचान तथा लगाव भी नहीं है। यही कारण है कि 'अंधेरे में' कहानी की "मां मुझसे हमे"ाा दूर रहती है। कभी न मिटने वाला एक अलगाव बनाये रखती है। .....किन्तु बाबू की बात दूसरी है .....वह मुझे अपने बहुत निकट और जाने पहचाने लगते हैं कुछ ऐसा है जो हम दोनों को मां से अलग कर देता है।"[29]

निर्मल वर्मा के पात्रों को मृत्यु का भय भी निरन्तर सताता रहता है वे इसी उधेड़ बुन में लगे रहते हैं कि मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा ? 'डायरी का खेल' की "बिट्टो मरणासन्न होते हुए भी एक स्वाभाविक स्वप्न में खोई रहती है।"[30] ....."हां मेरा विवाह होगा और तुम वहीं बैठे सब कुछ देखोगे।"....."कभी–कभी मैं सोचती हूँ – बब्बू जब लड़कियां दुल्हन बनती है तो कैसा लगता है। मरने से डर नहीं लगता। लेकिन मरने के बाद क्या होगा। यह सोचते ही डर लगता है, मरने से पहले जी भर कर खूब जीना चाहिए।"[31]

'एक शुरूआत' का नायक 'मृत्यु और मुक्ति' के भय से ग्रस्त है। वह कहता है "तीन दिन भूखा प्यासा रहकर वियाना की सड़कों पर भटकते रहने के बाद जब

रात को होटल के कमरे में आया था तो लगा था जैसे भीतर की वह हर दूरी बहुत पास बहुत आत्मीय सी हो आई है, सिर्फ एक डर रह गया है – डर जो अपने में अपना ही आलोक समेटे है। वियाना की उस रात लगा था जैसे मैं गड्ढे के बहुत नीचे हूँ, जिसके नीचे और जाना नहीं होता तब उन लम्हों में होटल के तंग सीलन भरे अकेले कमरे में यूरोप का अर्थ धीरे–धीरे जोड़ पाया था .....टेरर .....आफ एन लाइटमेंट – ऐसा भय जिसमें मृत्यु और मुक्ति दोनों समाहित है"[32] 'लन्दन की एक रात' का नायक अन्य सभी पात्रों की आंखों में एक भय देखता है। "उन सबकी आंखें मुझ पर उठ आई, खामो"ा और तनी हुई। मुझे लगा जैसे उस खामो"ाी में एक अजीव सा भय उभर आया है, मेरे प्रति उतना नहीं जितना उस अज्ञात नियति के प्रति जिसका निर्णय अगले चन्द लमहों में होने वाला था।"[33]

'दहलीज' की 'रूनी' शम्मी भाई से प्रेम करती है और स्वयं उसका प्यार पाने के लिए सोचती है "मेरा भी एक रहस्य है जो वह नहीं जानते, कोई नहीं जानता। 'रूनी ने आंखें मूंदकर–मूंदकर साचा मैं चाहूं तो कभी भी मर सकती हूँ।"[34]

'डेढ़ इंच ऊपर' का नायक इसी बात में हमे"ाा घुटता जाता है कि उसकी पत्नी ने उसे अपना वि"वासपात्र नहीं बनाया और जब उसकी पत्नी को पुलिस द्वारा मार दिया जाता है तब भी वह यही सोचता है कि कम से कम वह उसे तो अपने 'राज' बतला देती, उसे वि"वास ही नहीं होता कि वह मर गई है। वह कहता है – "बार–बार मुझे यह ख्याल कचोटता है कि स्वयं मेरी पत्नी ने मुझे अपना वि"वास पात्र बनाना उचित नहीं समझा।"[35]

निर्मल वर्मा की कहानियों में जो मानसिक परिवे"ा देखने को मिलता है वह पा"चात्य विदे"ाी परिवे"ा है। भारतीय परिवे"ा में जहां व्यक्ति, अमन, शान्ति, खु"ाी एवं आत्मीयता के बीच जीवन व्यतीत करता है वहां विदे"ाों में अजनबीपन, कुण्ठा, निरा"ाा, भय, तड़फ के धुंए से भरा दम घुटने वाला परिवे"ा है जिसमें व्यक्ति न आसानी से मर सकता है न खु"ाी से जी सकता है। विदे"ाों में लोग किसी को अपना कहने के लिए तड़फते रहते हैं परन्तु जीवन भर उन्हें कोई अपना नहीं मिल सकता जो पीड़ा को समझ सके तथा जिसको अपने दिल के दुखड़े को बताया जा सके। उन्हें कोई भी हमदर्दी नहीं मिल पाती जो दुःखकाल में उन्हें सांतवना दे सके। विदे"ाी परिवे"ा में मानवीयता और आत्मीयता से ज्यादा महत्त्व स्वार्थों एवं मतलब परस्ती को दिया जाता है जिससे मानसिकता संकुचित हो जाती है। मानसिक परिवे"ा के अन्तर्गत मानसिकता महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जब कहानी की मानसिकता ही बदल जाए तो कहानी का रुख ही बदल जाता है। ऐसा ही निर्मल वर्मा की कहानियों में भी दिखाई देता है जिसे वर्णित करने में कहानीकार सफल रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कादम्बिनी : क्यों और क्यों नहीं, अंक जुलाई, 1974
2. परेश – एक प्रभाती रचना, रेस्तरां का बूढ़ा, गिटार वादक, उद्धृत कहानी और कहानो समीक्षा का मूल्यांकन, सं0 राकेश दरस मदान।
3. निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियां, भूमिका से।
4. निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियां, भूमिका से, पृष्ठ 7
5. कादम्बिनी, क्यों और क्यों नहीं, स्थाई स्तम्भ 1 जुलाई, 1964
6. निर्मल वर्मा, बीच बहस में (अपने देश वापसी), पृष्ठ 10
7. निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियां, भूमिका, पृष्ठ 7
8. निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियां, भूमिका, पृष्ठ 8
9. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, अपने देश वापसी, पृष्ठ 10
10. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, अपने देश वापसी, पृष्ठ 14
11. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, अपने देश वापसी, पृष्ठ 14
12. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, अपने देश वापसी, पृष्ठ 14
13. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, जलती झाड़ी, पृष्ठ 81
14. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, जलती झाड़ी, पृष्ठ 47
15. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, एक शुरूआत, पृष्ठ 53
16. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, दो घर, पृष्ठ 55–56
17. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, लवर्स, पृष्ठ 13
18. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, एक शुरूआत, पृष्ठ 47
19. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, पराये शहर में, पृष्ठ 48
20. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, जलती झाड़ी, पृष्ठ 90–91
21. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, लन्दन की एक रात, पृष्ठ 124
22. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, अन्तर, पृष्ठ 152
23. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, दहलीज, पृष्ठ 100
24. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, जलती झाड़ी, पृष्ठ 90
25. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, लन्दन की एक रात, पृष्ठ 106
26. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, लन्दन की एक रात, पृष्ठ 120
27. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, जलती झाड़ी, पृष्ठ 83
28. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, दहलीज, पृष्ठ 99
29. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, पृष्ठ 81
30. निर्मल वर्मा, परिन्दे : डायरी का खेल, पृष्ठ 16
31. निर्मल वर्मा, परिन्दे : डायरी का खेल, पृष्ठ 26–27
32. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, एक शुरूआत, पृष्ठ 54
33. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, लन्दन की एक रात, पृष्ठ 106
34. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, दहलीज, पृष्ठ 97
35. निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियां, डेढ़ इंच ऊपर, पृष्ठ 101